SHRI DUKHU MAJHI

Shri Dukhu Majhi is an environmentalist.

2. Born on 1st January, 1945, Shri Majhi lives in Ghorabandha, Sindri, District- Purulia, West Bengal, where the temperature rises upto 50 degree Celsius in the summer. The solitary man has been relentlessly struggling to save the mother earth in his unique way for three decades.

3. Shri Majhi had somehow been inspired by his father in childhood and later on, by a government campaign on the need of tree plantation. There he came to know how the trees invite rain and supply oxygen to the environment.

4. Armed daily with two canisters of water, sacks, shovels, burnt wood, saplings, mounted on a cycle, Shri Majhi has spent years planting trees and properly nurturing those. Over the years, this illiterate tribal man has perfected his own unique method of preparation, plantation and nurturing till they grow up. He covers his newly planted saplings with cloth taken from the nearby crematorium to protect them from unwittingly harming passerby.

5. Since the region is warm and the rainfall scanty, Shri Majhi plants trees in the roadsides, rural markets, bus stoppages, crematoriums, temple areas, school premises, health centres etc.

श्री दुखु माझि

श्री दुखु माझि एक पर्यावरणविद हैं।

2. 1 जनवरी, 1945 को जन्मे, श्री माझि घोराबंधा, सिंदरी, जिला–पुरुलिया, पश्चिम बंगाल में रहते हैं, जहां गर्मियों में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। वह अकेले ही तीन दशक से अपने अनूठे तरीके से धरती मां को बचाने के लिए अथक संघर्ष कर रहे हैं।

3. श्री माझि बचपन में वृक्षारोपण की आवश्यकता के बारे में अपने पिता से और बाद में सरकार के अभियान से प्रेरित हुए। उन्हें पता चला कि पेड़ कैसे वर्षा करने में सहायक हैं और पर्यावरण में ऑक्सीजन की आपूर्ति करते हैं।

4. श्री माझि वर्षों से प्रतिदिन साइकिल पर दो कनस्तर पानी, बोरियां, फावड़े, जली हुई लकड़ी, पौधे लगाने और उनका पूरा पोषण करने का कार्य कर रहे हैं। इन वर्षों में, इन निरक्षर आदिवासी ने पौधे तैयार करने, उन्हें रोपने और बड़े होने तक उनका पोषण करने की अपनी अनूठी विधि ईजाद की है। वह नए लगाए गए इन पौधों को राहगीरों द्वारा अनजाने में किए जाने वाले नुकसान से बचाने के लिए पास के श्मशान से लिए गए कपड़ों से ढक देते हैं।

5. चूंकि यह गर्म प्रदेश है और वर्षा बहुत कम होती है, इसलिए श्री माझि सड़कों के किनारे, ग्रामीण हाटों, बस रुकने वाले स्थानों, श्मशानों, मंदिरों के आस–पास, विद्यालय परिसरों, स्वास्थ्य केन्द्रों आदि में पेड़ लगाते हैं।